Raga of the Month April 2021 Raganga Kafi

रागांग काफी

हिंदुस्तानी संगीतके दस थाटोंमे काफी थाटसे उत्पन्न होनेवाले रागोंकी संख्या बहुत बड़ी है। इतनाही नही , बल्कि काफी थाटमें सम्मिलित रागोंका छह रागांगोमे वर्गीकरण किया जाता है; जैसे, काफी, धनाश्री , सारंग, कानड़ा बागेश्री और मल्हार। काफी रागांगोके रागोंमे काफी, सैंधवी- सिंदूरा , पिलू और बरवा इनका समावेश किया जाता है। अब हम पहले काफी राग, एवं रागांगके विशेष स्वर प्रयोगोंकी जानकारी लेते हैं -

काफी रागमें गांधार और निषाद कोमल और अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। जाती संपूर्ण संपूर्ण है; वादी पंचम और संवादी षड़ज है। गान समय मध्य रात्रि या फागुन महीनेमें यह राग किसीभी समय गाया - बजाया जाता है। काफी रागमें आजकल होरी, ठुमरी, दादरा ऐसे सुगम संगीतका प्रचलन अधिक है। इसके कारण रंजकता बढ़ानेके लिए शुद्ध निषादका प्रयोग कभी कभी आरोहमे किया जाता है।

आरोह- सा रे ग, म, प, ध नि सां; **अवरोह**- सां नि ध, प, म ग, रे सा ;
विशेष स्वर प्रयोग - सा सा रे रे ग ग म म प; रे प म प ग रे म प; प, ध म प ग रे, म प ध नि ध प , म प नि नि सा ; म म प सां, नि ध प ; म प ध ᵐग रे , प ᵐग रे , **ग रे ग सा रे प**; म ग ˢᵃरे; ˢᵃरे ˢᵃनि सा.

काफी रागांगका दूसरा महत्व पूर्ण राग **सिंदूरा** है। प्राचीन सैंधवी रागको प्रचारमे सिंदूरा माना जाता है। प्रचारमें प्रायः काफी-मिश्रित सिंदूरा सुननेमें आता है। उसमें शुद्ध निषाद का आरोहमें प्रयोग होता है। इस रागमे षडज मध्यम संवादका प्राबल्य प्रतीत होता है। उसका स्वरूप इस प्रकार है -

आरोह- सा, रे म प, ध नि सां **या** नि सां **या** म प नि सां; **अवरोह**- सां नि ध प म ग, रे सा ; **विशेष स्वर प्रयोग** - सां रें नि ध प, म प ध ग रे, म, ग रे ग रे सा ; रे म प ध , म प ध रें नि ध प, म ध प ग रे , म ग रे, रे ग सा

काफी रागांगका राग **बरवा** एक धुन प्रधान राग है। प्रचारमें दोनों निषाद तथा कोमल गंधार युक्त बरवा राग गाया जाता है।

आजके ऑडिओमें हम पं. के जी गिंडे द्वारा लेक्चर डेमो में प्रस्तुत राग काफी, सिंदूरा तथा बरवा राग की विशेषताएँ सुनेंगे; और विदुषी लक्ष्मीबाई जाधवने गायी काफी ठुमरी , अल्लाउद्दीन खां साहबने बजायी सिंदूरा धुन और अंतमें पंडित वसंतराव देशपाण्डेजी द्वारा प्रस्तुत राग बरवामे एक बंदिश और दादरा सुनेंगे।

{ आभार प्रदर्शन - क्रमिक पुस्तक मालिका और संगीत शास्त्र; अभिनव गीतांजली -पं रामाश्रेय झा, पं . यशवंत महाले, श्री अजय गिंडे }

०१-०४ -२०२१